

संधिगतस्यलिंगं सुविष्टसध्वययथुः समुता ॥ विजयता नानिहवा
नृजाध्वविष्टयज्ञातौवनित्यविपक्षितवाध्वनृजावतिशक्तिश्रीमेत
वितृजातवन्ति ॥ क्रिष्णतिष्ठत्रविमोक्षकाक्षिफलध्वनृग्रिधत
सुसुखीकालुषतः कक्षातमध्वकविद्वलितंयितीतीतमस्ति कृत्ति
कालुषतमजहानिवापितंयमज्ञागतंयसूतितंयवकु ॥ विं नदिभांदा
दसध्ववि कालुषां सांगताध्वयनजातिवृद्धिः ॥ संधिप्रमानततिहृष्ट
३ सध्वमसदाः सध्वनतादध्वला ॥ सध्वीसुवस्वासुमसमीसाहोतमस्य

कोलं ख र वि म त ॥ त ज न स क ल व ह ॥ अ प्र या नि स मां स भा ना रि म
 ति ल व तु ल्यं ॥ अ स य ना र्थ म डि का म क के ला म प रि तं ग त लो
 त धु ते सि र्ग ॥ अ वि वि वं प्र न प य ॥ स धा रि द्या त त्र नि तां ला ग ग व
 व थु म्भं म ति ॥ म प्र वि य म्भ स न डा ना यो धु त ना न स्यं ग त कि अ न स १
 ला द्य त न डा नं म य व न स धा रि द्या त न जा य न व भा गं भां मा ग्व ना उ
 व स म ह य ॥ अ स्य जि ला ता म वं गा नं का र्दी ता म क स्य व उ व ड वै वा
 र्ग्य द्य स्य त म क कु न सि र्ग नि ॥ ति न क वा ला क द्या तु स धि म्भं क त

२०
 अ वि वि क र्मा

अ धू तं ज घ न प्र ति पि वं व व र्जु य द्य वि व कु त ॥ अ मु र्द गि क वा नं
 व ल ना त व र्जि त व य ॥ त ज न स नां क ल अं व प व म र्द नि व ड य ॥ स
 म्भ क स धि त म य ल्पि दू नि कु य नि वं ध ना ॥ सं क्रा ला द्या यि या ग क
 दि के मां तु वि व र्जु य ॥ त न स्य नि न ग्मां नि रि द्य त न न का ति तु ॥ क
 या ला नि वि रि द्य न स्य ट नि न व का ति तु ॥ ॥ ॐ ति नि दा न व नि
 कु म ह ज नि दि कि ता ॥ ॥ य उ अ व मा म मि ति व क म य कु त र्द यो वा
 व नं प्र वृ ल य म स ध वृ की ॥ अ त्यं क नं प्र वि ज ति प्र वि दा र्ग्य

तस्मात्तानि पूर्व विदिता नितरां सुख्य ॥ तस्यातिमात्र गमनां ग
 ति विषय तयो नादिव यद्व हंति तनम तातु नाडि दा धे मृति ह व ॥
 ती सा वृथ ग क ग ग सं मृच्छि ते वयि व गत्या निमित्त ता स्या ॥ त ग्रा
 नि लास्य त्र ष शु ष्य मू षी ग सु जा रु ना त्र बंध मधिकं गुयं कि कृ पा सुयि
 का ७ त कृ ठ ह त क लि य लि दा ह मू का यित सु व ल्य धि क मू क्क मह १०५
 सु वा पि ॥ कृ या क हा द ष ह द्य ना ष द्दु पि कि ला ष त वा स क र्त्तु त न
 जा त क नि प्र धा हा ह ऊ ज ह न ष ग न मू क्क न व कृ णा वा प्र स्यां ह व
 वृ

त्र क तु कः य न द य तिः ॥ ८ नि म्यः र्ना दाः न स मा हाः आ द ग
 ग ध कः त्र का वि ल मि क र्ष १ आ नः व क रिः त्र त ता तः दं तिः व
 हाः कृ ठ ह त दिः मि व कि सिः ॥ ९ ड ऊ वः अ ति य सः वा ना द वा
 क तु स ल्यः दृ ह का न सः ध न कृ र्ष र्ना लः ॥ १० नृ नृ थ न या व कि
 ध न न गृ गृ नृ ष नः अ वा द गः कृ षः स क कृ यः वा वि दा कां मा
 क कां नि वं क र्त्तु ॥ ॥ ह ला ट क वा कृ वि कः व कि ना ग स पि
 य ति क न वि नां क या म्म सः वि ष वा तु स मा ह व ॥ ॥ व कृ मृ कृ

अपि क्षान्तिः प्रवाग्निरुपि नागनं ॥ ॥ बालादः व क विः य त क स
अविः विव्यसिः क न वि न हाः श्रु क हाः य गः य त सम हा गः वी न
स या थान न स्रं स य न पः चि त्र कृ ष ध य-ता य स्र आ क व यो क
स आ क नां सः ॥ ॥ किमि कृ दा ह ॥ मं दाग्निः सं य तं य त्रि दा ष डं ११८
पु त्रिं नं प्र सु ता ह्म य न क न त्रु ह त स्व यः य व क र्म गु ना ती तं क
व हं कि ह मा ल व ॥ नृ सा कृ ष वि दि गि निः ग ता का वि त्र का
व योः दं की न सां ऊ नं च तिः स य कृ ष वि ना स नं ॥ वा तं ल कृ

वं का वा सं पि ल न्ना दं व नं क हा ॥ मं लु ना र्था वि य डी व म ष्ठा
र्यं वा त पि त डं ॥ व म्म क कृ षं कि ति मं सि ध्मा स स वि वा ति का
वा त ल्हा ध्मा र्वा वः श्रु षा पि ता द ड् स ता ल्हा षिः पु ल्हा सी कं स वि स्र
टं वा मा य र्म द ल न्ना स्रं वः स्र का क पु र्वं त्रि क दू दू क का क
ल्लाः पु ल्हा सी क मृ कृ जि द्वाः म हा कृ षा नि स्र फ त्रु ॥ व क मं द स्र वि
जा नि क ना म्हा व स्र र्वा वाः कृ ष द न ड नी तु ल्य कृ पि षा पु नं पु य ६
सं व कृ ष द ना प्र व ४ ना तु का र्था वि वा न ना ॥ कृ षै क स्रं व वि त्र

ॐ स्वदांग नृत्य कनकदावि॥ वतह त्रिपुतीत कनी लकुष्मण
 कनकात सति युवा मुः सा सा द कातं त्यति वीक्षित सा द्वा शुष्मा
 नृपित विविहं नृपुन॥ ह के विदग्धं व्यथवा व्यहं कः कजाति
 कि क्ता सुवमिक दावि ॥ ३ जो नृपुन मवविधमव कः हृत् १२१
 क्रि किं दाहं जि नृसा नृजं वा॥ कन व स न दाह मो युः मह कि म
 नृविं नृ नृव क द पि नृ नृ नृ नृ क नृ मं नृ नृ पि डि कां ग
 नृ नि वि त ग नृ नृ ग व य ॥ नृ ग नृ य मं नृ पि नृ नृ य नृ

स सा धात न नः वि ना धि ता ह व द्या य ३ कृ कृ सा ध ४ स क
 स वी॥ कृ नि वी व नृ जे न वः ३ ७ ता नृ वि ना त सा द व
 मि ले पा ३ द ह न व स सा द कं नृ नि डा श्वि कं द नृ ग नृ ॥
 नृ गी ग ता व नि क्रो ड नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ
 नृ नृ प य ३ स य नृ नृ नृ नृ नृ ॥ नृ नृ पि नृ नृ नि ह नृ नृ नृ नृ नृ
 ति नृ ना ग नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ
 नृ व नः नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ

लसंखलुडनंथरुनदायादुइखाडकसडनंथरुनःमस
 यिरुनांवेसिपसितनांभाकमिखातजनावःशब्दुवि॥व
 तुसमथ॥कभावृक्षसुउउवःकलुनहवृखासुभागा
 वनितसस्यासोयताशुपदापयत्॥खंदयुसुसमादाय
 कीलपुसुंदयवव॥श्रिजात्रमसुभावाकं३३॥लीवासी १२२
 द्विजिनकंअरुयाससकानिर्वेववृक्षदादगमासिक॥
 तदहमविवनागसासंखदिनमववःमधुनासुपसं

वेवपुक्तिषामुपयाजय॥हलासावाकशुद्धिदृष्टीसीकादा
 हामयितन७॥अग्निसंदीपनंरुद्यंखंनृषियसीतसमं॥पि
 यानिवृक्षक७॥मउसासिषुनःअतिनयागिआरुसःसा
 वनंरुं१दुइरुं२धनषूनथसःवातकःनडांइत्यावःसुकमो
 नकसुनःगवशहंनःमुथिःवंगभावतःजितीःरुनदःश्वन
 धनकरभासवृक्षयादःमनवमंगःसुयकशुमंगविपखम
 नमंगधनकसुमाडाःकसिपुइकीयःधनयानसुग्यदधय

१२ सुविपुल विविक्त

रवि मदाः थंन व वः आ सह यु अ सुपिह मा कः अमि क्का य क
ह डा ग सं प थ ॥ ॥ पिय वि ख न्द ॥ ॥ ठ ठ ति दा न प नि कु म अ
सुपिह वि कि ता स मा फ ॥ ॥ त व अ मृ क तु आ नि सं स वा द ॥
ष का प त ॥ वि स र्गः स क धा क या र्ध त ठ व नि सं र्ग ॥ य थ क
य मि ति श्वे का वि स र्ग दं दं ज म य ॥ वा ति क ठ ये ति क श्वे व ठ क
रु ज ठ सं ति वा त क ॥ व त्या न व त वे सं र्ग व कं क स क धा म य
आ य धा वा त पि का त्या ग ० स्म ठ क रु वा त ज ॥ य म क र्द म का धा

१२३

सं स पि रु क रु सं त व ॥ व कं र सी का ल्य ग्मां सं द व्य दा षां मि मा
म ता ॥ वि सं र्ग ॥ सं स न्य ति वि द्यु या ठ स क धा त वे ॥ तु तु वा त ज
वि सं र्ग वा त ठ न स म य थ ॥ य थ मृ न अ नि स्ता द म य थ वा द वा न
यि क क दू त ग ति ठ पि त ठ न वि ग्ग ति वा हि ता ॥ क र्ता क ल य त ठ मि
मं क रु ठ न स मा त न क ॥ सं नि वा त या स म नृ ग्वः स र्ग ति ग स म यि
त ॥ वा त पि रु क रु मृ दि म र्का ति सा न तु ह मे ॥ अ मि ह दा ग्नि स म
नं त म स्ता ना व के र्ग त ॥ क ना ति स र्ग म र्ग व दी का जी न वि की र्ग व ॥

यं यंदं वि सूर्यं वि सूर्यं तु त वत्स म॥ अं निजो ना सी मानि ला
 न का वा मु व आ धु त॥ अग्नि द ग्वं व सूर्यं टे ४ जी युं ग लो दु त स
 व॥ म म्मा रि सा वि वे सूर्यं ४ स्या दा ता ति व त सूर्य॥ आ धि ता मा ह न
 तं ह्य नि दा व श्म स मि ल म॥ हि ध्मां व स ग गो व स्या मी दु गी न त
 न म न॥ क वि म्मा दु मा न ति ग स्ताः ह मि ग यो ग ना दि धू आ स
 या न सूर्य ४ कृ षा म ना द ह ग मा र वा॥ दु प्र वा धु श्रू त नि दा सा
 मि वे सूर्य उ अ न्त॥ क र न त र द य व ना ति ला नां त र द धा क र

१२४

निं म्म वा सा क रू का प टा तः रू न त्रियं य त्रि त नि म्म सि द्धं॥ वि
 सूर्य दा हा न न श्म य कं लुः वि सूर्य ट नृ का व मि त्र क स्वा य॥ स्वा
 दाः आ द गः क तु क था न द य तः त्रि रू ला कृ ति डा न वि सूर्य क रू
 रु य ज न मा ह म न ग कः या सूर्य आ न डा डा थ क स्वा य न थ
 न मा व रू॥ क ला ति सा या व म थ सूर्य मा स द ज न कृ मा ४॥ अ
 ना व का वि या को वः वि सूर्य आ म प द वा॥ सि ध्मां नि वा त क रू वि
 क रू रू ता वि सूर्य ४ स द्वा स क रू त क रू श्व न मि दि म ति॥ यि ला

उसको विक्रि

सका जनव प्रवृत्त व दसा ४४ कु कु मर्म सख वक्ति हि सु
वे नवा ॥ ॥ ति निदान पत्रिकु म वि स र्प वि कि सा भिका
॥ ॥ क द से ती सा वि हा हि न का प्रे न जि का थ स न त प धे
॥ त था क थ प न वि स र्प य न क थ नि दा बा य व ना म य मु
त्य य मा सि य त न कः मा सा सि नि प्र द थ क र ध्या ना क र्ध नि
वि हा दा स वा न क न प न ४ म ना न ॥ ॥ अ मि द य नि ला हा
दा ४ स क न न क पि न जा का वि से र्ध वा द ह स वि हा ट ००

१२०

ति स्म त ॥ मि प्रा त स स त वि धः क न गृ य र्ध त द नं स क का व ल ता
व नि वा त वि स्म ट स क न ॥ क स दा ह न जा मा वा या क गृ का ति
न लि त पी त सा हि त य ल व यि त वि स्म ट स क न ॥ क र्ध ना व क
जु प्रा नि कं लं का ठि य पां ल गा ॥ अ त द नं वि ना त्या की स वि स्म ट
क र्ध मि का ५ कं ल दा हा क न षु दि न ते मु क र्ध पि त क ॥ वा त
वि क कृ ना य थ क र्ध ति वृ य द ना ॥ कं ल सु मि त्य गु र तां जा
नि मा क र्ध वा ती कं ॥ म थ नि मा न ता क व क थि ना न्य पु पा क वा न

पहला गतवा माह कुदि मरुता न जा ठ नः प्रसा था वयधु सं
आ सा सो धाः स्यान्ति धा धा ठ ॥ नका नक सुमथा ना गुजर न नि
रा सु था ॥ वदिता था म न क न ये हि क न तु हु तु नां ॥ नत सिद्धिं स
मायाति सिद्धि आ ग ग ते न वि ॥ अ धर्म धी व र्वे स र्वे ४ कं दे मा ल्य
म सं कि नं ॥ वा प्र ह नो ४ क ता क दा स न कं यो ग मि न य ॥ वि ॥ १२१
स र्वे मा न त ४ क था क न न ४ स ह से वि नं ॥ स न टे ४ ॥ अ र्क न १२१
न जा दा सा धा व य मि नं ॥ इ नि म्ब वा अ क तु वा य ना र ह न ति

पटा ला म त ह नि म्ब वा स का वि ष य र्थ टे ४ ॥ ख दि ना वृ य त का र्थ वि ह
ठ क न ना स य ॥ ॥ य आ द व ति ॥ ७७ ७७ ॥ खा दाः आ द स र्व क नः ख य न
म सुः थ न का थ दा या अ ल्य ड न दू ति क न मा व क्ता ॥ प य क स प ना ग ता नि
गं स म ध य स ति का ॥ अ न यि ह व स था य वि ष वि ह्ना ट ना ज न ॥ ॥ प य
क म्भः ता सि स्याः ॥ सु मि दिः थ न न ख न दा स्यां स य न यं न स र्द टि मा क
प टा न स क वृ दं व नि म्ब वा सा रु त ति कं किं न न र हा वि कं व न लं
व ति कं अ म मि ति दी अ ॥ ति दा व वि ह्ना ट वि स र्व कं ॥ १२१

विष्णुविक्रम

दयते कृतिः न निम्नः आदगः किरुत्तागुदगुः धुपं वतिकुध
वषडनः प्रियदा वविहृत् नाना विमर्ष नाना वासं नमा वका॥
न कदा धानि नः साध कृत्तु साध द्विदोष कृत्तु सर्वं नृपा विना धा
नं स साध हर्ष्य पद यो॥ ॥ कृतिनिदान पत्रिक मविहृत् ट विकि
सा॥ ॥ कृत्तु सृत्तु वल कृत्तु विलेखन गताग नेशः दृष्ट निष्ठा वका
ग्रं सुसुदृष्ट वनादके॥ कृ ५ दृष्ट कृत्तु साध दग दोषाः ससु
दृता जनयंति अति प्रसिद्धं नृत्तु वक न संगता॥ ॥ मसुता

१२८

मेषाग विक्रम

यः कृतिः न निम्नः आदगः किरुत्तागुदगुः धुपं वतिकुध
वषडनः प्रियदा वविहृत् नाना विमर्ष नाना वासं नमा वका॥
न कदा धानि नः साध कृत्तु साध द्विदोष कृत्तु सर्वं नृपा विना धा
नं स साध हर्ष्य पद यो॥ ॥ कृतिनिदान पत्रिक मविहृत् ट विकि
सा॥ ॥ कृत्तु सृत्तु वल कृत्तु विलेखन गताग नेशः दृष्ट निष्ठा वका
ग्रं सुसुदृष्ट वनादके॥ कृ ५ दृष्ट कृत्तु साध दग दोषाः ससु
दृता जनयंति अति प्रसिद्धं नृत्तु वक न संगता॥ ॥ मसुता

मित्रनः अतः गताः अथ वनसमंनतः सुसमतिवकर्त्तुं याः ॥ कन
तिदोषेष्वथ स्वमावृत्तः सकर्त्तुं शुभं पुनर्विलविना गता ॥ ॥ कर्त्तुं
अतस्मिन् वातः अतिविविधनस्वनानां हिमदत्तं भव्यान्कर्त्तुं
नादः सुदुर्ग्रतः ॥ उदाजवृद्धदवायः शुभं मावृत्तं अतिशुद्धं
मौष्मान्वाता वायुवायिर्ग्रतं न जायते ॥ वायुः पिरादिरियुक्ताव
लुब्धाषोपमं शुभं कर्त्तुं याः कोलं सकर्त्तुं कदुर्ग्रतः ॥ ॥ ध
कर्त्तुं कदुर्ग्रतः ॥ ॥ देवदानव्याः शुभं गताः कर्त्तुं सन्धवेः
निर्वासिहं वस्तुमूर्त्तं कर्त्तुं शुभं निवासि ॥ देवदानवः शुभिः सत